

बाबा ने कहा, तुम्हें अपना टाइम वेस्ट नहीं करना है, अन्दर में नॉलेज का सिमरण करते रहो तो निद्राजीत बन जायेंगे, उबासी आदि नहीं आयेगी.

बाबा ने हमें सारे सृष्टि चक्र का नॉलेज देते हुए समझाया है की यह सृष्टि का चक्र 5000 साल का है उसमें कलियुग के अन्त में जब सारी सृष्टि (आत्माये और प्रकृति) तमोप्रधान हो जाती है तब सर्व आत्माओं और प्रकृति को पतित से पावन बनाने (या कहे तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने) स्वयं परमपिता परमात्मा इस धरती पर आते हैं और जीवात्मा - परमात्मा का मिलन होता है तब से यह पुरुषोत्तम संगमयुग प्रारंभ होता है. यह पुरुषोत्तम संगमयुग बहुत छोटा, सिर्फ 100 साल का होता है. इस संगमयुग में स्वयं भगवान, विश्व की कुछ गिनी-चुनी भाग्यशाली आत्माओं को (जो आत्माओं का पार्ट सतयुग और त्रेतायुग में हैं) ज्ञान और योग सिखलाकर पतित से पावन बनने का रास्ता बताते हैं.

बाबा ने बताया है की योग से ही हम आत्माये अपने लास्ट 63 जन्मों के विकर्म जो की विकारों के रूप में आत्मा में हैं उसे जला कर संपूर्ण नष्ट कर सकते हैं. और बाबा की याद से ही हम आत्माये नये विकर्म बनाने से भी बचे (सेफ) रहते हैं. दूसरा है ज्ञान, जिसे आत्मा को गुप्त आमदनी होती है. बाबा ने आज की मुरली में भी ज्ञान दान के महत्व को समझाते हुए कहा, जितना हम ज्ञान दान दूसरों को करेंगे उतनी ही बाबा हमारी झोली और भी ज्ञान रत्नों से भरेंगे. हम बच्चों को ज्ञान दान करने में कभी मनहूस नहीं बनना है. लेकिन ज्ञान दान भी तब कर पायेंगे जब की हमने स्वयं इस ईश्वरीय ज्ञान को पूरा समझा होगा.

योग से आत्माये शक्तिवान और पवित्र बनती हैं, और ज्ञान दान से हम सतयुग-त्रेता में ऊँच पद प्राप्त करते हैं.

हम सब ब्राह्मण जानते हैं की अब इस संगमयुग का बहुत थोड़ा सा समय हमारे पास हैं और इस बचे हुए समय में हमें अपने 63 जन्मों के विकर्म भी विनाश करने हैं और ईश्वरीय ज्ञान में भी पुरा निपुण बनना ही हैं, जिसे हम दूसरों को यह ज्ञान दे सके.

जितना बाबा से हमारा योग बढ़ता जाता हैं आत्मा बहुत अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती हैं और आत्मा लाईट (हलकी) और माईट (शक्तिशाली) स्वरूप बनती जाती हैं. आत्मा जितना ज्ञान धारण करती हैं, उतनी निर्बन्धन अनुभव करती हैं. ज्ञान और योग से आत्मा में अलौकिक खुशी बढ़ती जाती हैं.

अब संगम का जितना टाइम और बचा हैं, हमें स्वयं में चेक करना हैं कितना पुरुषार्थ हमारा बाकी हैं और प्राप्तिओं को भी ध्यान में रखना हैं. ये सोचे तो हमारी नींद ही फिट जाती हैं.

बाबा ने लास्ट सीजन की मुरली में बताया था की सुबह उठते सबसे पहले याद करना हैं की "सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार हैं. मैं कल्प-कल्प की विजय रत्न आत्मा हूँ."

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email -- a.brahmin.soul@gmail.com